## भूमिका

मुझे महाविद्यालयीन शिक्षा से ही आधुनिक हिंदी काव्यधारा के प्रति रुचि रही हैं। आधुनिक हिंदी काव्यधारामें भी मुझे डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन की कविताएँ विशेष आकर्षित करती गई। डॉ. सुमनजी भारतीय संस्कृति के सक्षम अभिवक्ता है, प्रकृति के रस, रुप, गंधके उत्कृष्ट चितेरे हैं। उनका भाषापर असाधारण अधिकार हैं तथा स्वरोंमें जादू हैं। दूरदर्शनपर काव्य संगोष्ठीमें उन्हें देखा तथा सुना तो मेरे मनमें उनके प्रति अधिक जिज्ञासा पैदा हुई। एम.फिल् में लघुशोध प्रबंध का विषय चयन करते समय मेरे मार्गदर्शक डॉ. राजेंद्र शाह तथा गुरुजन डॉ. सुर्वेजीने अनेक जाने माने कवियोंके नाम बताये। मैंने डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन पर लघुशोध प्रबंध कार्य करने का निश्चय किया।

इस लघुशोध प्रबंध को मैंने छः अध्यायोंमें विभक्त किया हैं। प्रथम अध्यायमें प्रगतिवाद शब्द का विवेचन, प्रगतिवाद, मार्क्सवादी विचारधारा का हिंदी रुपांतरण, प्रगतिवादी चिंतनमें कार्लमार्क्स के पूर्व चिंतक और अन्य चिंतकोंके विचार, कार्लमार्क्स का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद तथा ऐतिहासिक भौतिकवाद का विस्तृत विवेचन, वर्ग संघर्ष की कल्पना, भारतमें प्रगतिशील चिंतनके कारण, प्रगतिशील लेखक संघ अधिवेशन, प्रगतिवादी कवियोंकी नारी विषयक भावना, प्रगतिवादी आंदोलनकी पृष्ठभूमि तथा प्रगतिवादी साहित्य की विशेषता और प्रगतिवादी साहित्य का प्रतिफलन आदि बातोंका विश्लेषण करेंगे। तथा प्रगतिवादी कवि और डॉ. सुमनका अल्प परिचय देंगे।

द्वितीय अध्यायमें सुमनका व्यक्तित्व, जिनमें जन्म, जन्मस्थान, माता-पिता, शिक्षा, काव्यसृजन की प्रेरणा, सन्मान, पुरस्कार आदि बातोंका समग्र विवेचन करेंगे।

कृतित्वमें उनके सात रचनाओंका तथा संकलनों का परिचय प्राप्त करेंगे।

तृतीय अध्यायमें प्रगतिवादी विशेषताओंके आधारपर सुमनजीके प्रगतिवादी काव्यसंग्रह, जीवन के गान, प्रलयसृजन, विश्वास बढ़ता ही गया, वाणी की व्यथा, मिट्टी की बारात आदि का विवेचन करेंगे।

चतुर्थ अध्यायमें सुमनजी के प्रगतिवादी काव्यके शिल्प विधानपर चर्चा करेंगे। इसमें सुमनजी के काव्यमें प्रयुक्त, छंद, शब्दालंकार, अर्थालंकार, प्रतीक विधान, गुणविधान, शैली विधान, शब्द शक्ति तथा भाषा के विषयमें विवेचन करेंगे।

पंचम अध्यायमें, प्रगतिवादी कवि डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन और अन्य प्रगतिवादी कवियोंका तुलनात्मक अनुशीलन करेंगे। इसमें प्रगतिवाद के प्रतिनिधि कवि ।) नागार्जुन और शिवमंगलसिंह सुमन

DR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

2) सुमित्रानंदन पंत और डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन, 3) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन, 4) गजानन माधव मुक्तिबोध और डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन, 5) केदारनाथ अग्रवाल और डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन, 6) रामधारी सिंह दिनकर और डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन, 7) डॉ. रामविलास शर्मा और डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन, 8) शमशेर बहादूर सिंह और डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन आदि के साथ डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन की तुलना करेंगे।

षष्ठ अध्यायमें उपसंहारमें डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन के काव्यमें व्यक्त शोधगत समस्त उपलब्धियोंको व्यक्त करेंगे।

मेरे गुरुजन - मार्गदर्शक प्रा.डॉ. राजेंद्र शाह का इस लघुशोध प्रबंधमें बहुत बड़ा योगदान हैं। उन्होंने न मुझे केवल प्रेरणा दी अपितु समय-समय पर सभी प्रकार की सहायता की। आपकी कार्यतत्परता, मौलिक सुझावोंने मुझे गतिशील बनाया। अपने व्यस्त जीवनमें भी अपना कीमती वक्त देकर इस लघुशोध प्रबंधके एक एक पृष्ठ को देखा-पढ़ा, सुधारा। अतः इस शोध प्रबंध की समस्त अच्छाईयाँ तथा मौलिक उपलब्धियोंका पूरा श्रेय मैं डॉ. राजेंद्र शाह को देती हूँ। आपके ऋण मैं कौनसे शब्दोंमें उतारूँ समझमें नहीं आता।

मेरे गुरुजन डॉ. गजानन सुर्वेजी के प्रति मैं विशेष कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे विषय चयन, सामग्री संकलन, तथा लघुशोध प्रबंध के बारेमें अनेक मौलिक सुझाव देकर उपकृत किया हैं। इस कार्य को पूरा करते समय मेरे पति श्री. प्रकाश जोशी ने बहुत कष्ट झेले तथा मुझे प्रेरित किया। अतः मै उनके प्रति सदैव ऋणि रहूँगी।

संदर्भ ग्रंथ प्राप्त करनेमें लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय सातारा, कला-वाणिज्य महाविद्यालय सातारा, छत्रपति शिवाजी महाविद्यालय सातारा, मुधोजी महाविद्यालय फलटण के ग्रंथपाल तथा उनके सहयोगियोंकी मैं विशेष रुपसे आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे मौलिक ग्रंथ उपलब्ध करनेमें सहयोग दिया।

इस प्रबंधका टंकलेखन करनेवाले श्री. धनंजय कानेहेरे की मैं ऋणी हूँ, जिन्होंने अल्प समयमें सुंदर टंकन किया।

मेरे लघुशोध प्रबंधमें अनेक प्रयत्नोंके बाद भी कुछ त्रुटियों का रह जाना संभव हैं। निर्दोषता का दावा मैं नहीं करती। फिर भी हिंदी के उदृश्य पाठकोंको मेरे इस लघुशोध प्रबंधसे डॉ.शिवमंगलसिंह सुमन की कृतियोंका थोड़ा बहुत भी रसास्वाद मिले तो मेरे परिश्रम सार्थक समझूँगी।

आपकी क्षमाप्रार्थी

Sou. P. P. Joshi

(सौ. प्रज्ञा प्रकाश जोशी)